असमिया संस्कृति का चित्रण

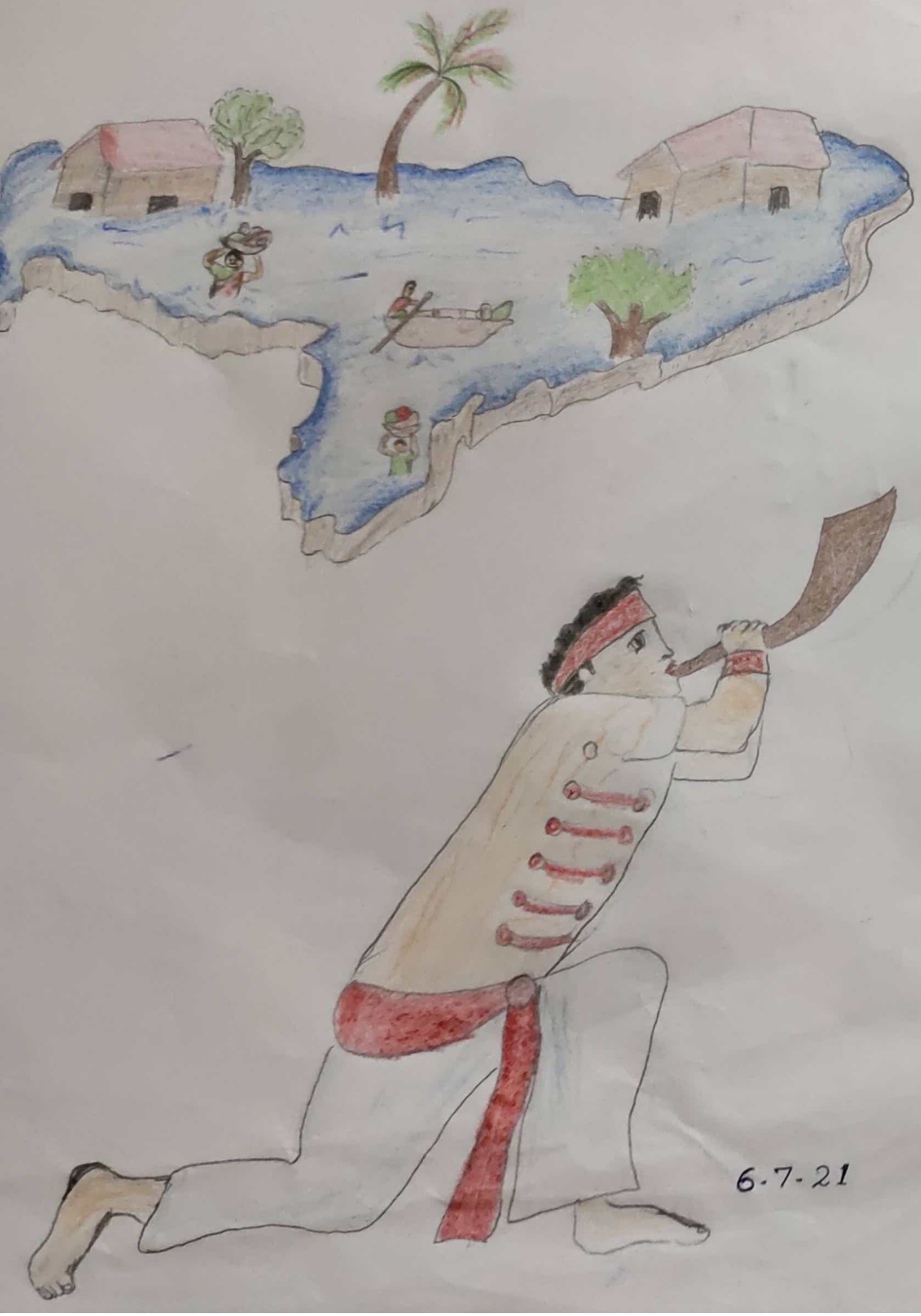

6-7-21

असम की संस्कृति

जननी जन्म भूमिश्च स्वर्गादपि गरीयसी ।।
अर्थात "मित्र, धन्य, धान्य आदि का संसार में बहुत अधिक सम्मान है। (किन्तु) माता और मातृभूमि का स्थान स्वर्ग से भी ऊपर है।"

जी हाँ हमारी मातृभूमि भारत भूमि को शत-शत नमन करते हुए आज मैं भारत भूमि के एक सांस्कृतिक धरोहर राज्य "असम" की महिमा वर्णित करने का प्रयास सम्मान के साथ व जहाँ की विलक्षण संस्कृति ने सम्पूर्ण विश्व पर अपने अनूठी छाप छोड़ी है। बिहू" आसाम का लोकप्रिय त्यौहार है। जिसमें मौसम का स्वागत उत्सव के रूप में आयोजित किया जाता है। तीन बिहु अर्थात रोंगाली भोगली और कोंगली अलग-अलग समय पर देखे जाते हैं। महिलाएँ पारम्परिक मिठाईयाँ बनाकर, नाच-गाकर फसल की लिए खुश होते हैं। यहाँ की नाटय कला अनूठी है। यहाँ की भाषा बोडो और असमिया कहलाती है। झुमुर गीतों का विषय पारंपरिक है, जो आम लोगो के दिन-प्रतिदिन के कार्यों से संबधित है। असमिया कला उत्तम शिल्प और कलाकृतियों का खजाना है। यहाँ पीतल शिल्प, धातु, शिल्प, मुखौटा बनाने, कुम्हार, बेत और बाँस शिल्प, गहने के उत्पाद में प्रचुर है।
मध्ययुगीन काल के दौरान, चित्रों के महत्वपूर्ण कार्यों में हस्तीविदारणव चित्रा भागवत और गोविंदा ने असमिया साहित्य को प्रभावित किया है।
असमिया भोजन विशिष्ट पूर्वी भारतीय शैली के उन्मुख है। विभिन्न स्थानीय शैलियों और बाहरी

प्रभावों ने भोजन तैस तैयार करने मे योगदान दिया है। खाद्य पदार्थ कम मसालेदार होते है। एक पारंपरिक असमिया भोजन खार से शुरु होता है और टेंगा; एक खट्टा व्यंजन है। चावल यहाँ का प्रमुख भोजन है आदिवासी भोजन मे मछली अपरिहार्य है।

संक्षिप्त मे इतना ही कहना चाहुँगी कि असम राज्य भारत की विशिष्ट छवि प्रस्तुत करने वाला अनुठा राज्य है। इस राज्यपर हम सभी भारतीयों को अत्यधिक गर्व है। और सदैव सदैव रहेगा।

जयहिन्द

जय भारत!

आदिति सरावता
कक्षा - VII - A